भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 08 | उदयपुर शनिवार 01 मई 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

नये गीतों का चलन

लोकगीत की रचना होती रहती है। इसमें लगता नहीं कि कैसे किस तरह का बदलाव होता है। कब नई चीजें उनमें जुड़ती चली जाती हैं। यह समय, समझ और परिस्थितिजन्य प्रभाव का दरसाव होता है। सन् 1960-70 के दशक में एक विवाह प्रसंग पर मैंने देखा, जब बारात चली जाती है तब पीछे रहता महिला समुदाय रात्रि को, देर रात्रि तक विविध प्रकार के खेल-तमाशे, स्वांग-प्रदर्शन करता पूरे गांव में जुलूस आदि का आयोजन करता है।

उसमें विविध स्वांग-अभिनय के साथ गीतों की झड़ी भी बड़ा रस और आनंद देती है। हालांकि उसे देखने के लिए महिलाओं की ही उपस्थिति रहती है ताकि उनमें उन्मुक्त हास्य, संवाद और रंजन को कोई पुरुष तो क्या बच्चा भी नहीं देख सके। इन ख्याल-प्रदर्शनों को विविध प्रदेशों में जुदा-जुदा नाम से जाना जाता है। मेवाड़ में इन्हें ख्याल-झामटड़े कहते हैं।

अपने गांव में मैंने 22 से लेकर 28 जनवरी 1961 के तीन विवाह समारोहों में महिलाओं द्वारा गाये कुछ गीत एकत्रित किये। परम्परा से गाये जाने वाले और प्रदर्शनकारी स्वांग-तमाशों का अध्ययन भी बड़ी बारीकी से मैंने किया किन्तु यहां वे दो गीत दिये जा रहे हैं जो उस दौर में नये प्रचलन के गीत कहे जा सकते हैं।

उनमें से एक गीत तो भाषा से सम्बन्धित है। शिक्षा का प्रचार-प्रसार नहीं होने से तब पढ़ने का अधिक प्रचलन नहीं था पर आजादी के बाद उसमें क्रान्ति सी देखी गई। गांवों में भी शिक्षा का उजास व्याप्त होने लगा तब बना अथवा वर बना लड़का भी पढ़ाई कर जेंटलमेन हो गया।

यह बना हिन्दी तो पढ़ता ही है, अंग्रेजी भी पढ़ने लगा है और बी.ए. तक की परीक्षा पास कर ली है। बालों में खुशबूदार तेल लगाने लगा है। अब वह कहीं भी जाता-आता है तो साइकिल पर सवार होता है। मोटरगाड़ी से दूर तक की यात्रा करने लग गया है। बैलगाड़ी उसके मन से उतर गई है और हवाजांज में उड़ने की उमंगें भरने लगा है। गीत है-

हिन्दी भी पढ़ै बनो, अंगरेजी भी पढ़ै
होय गयो बी. ए. पास
बनो तो म्हारो बन गयो जेंटलमेन।
कोट भी पैह्ने बनो, सेंडल भी पैह्ने
और लगावै घड़ी चैन। बनो तो.....।
तेल भी घालै बनो, कांगस्यो भी ओछै
और लगावै पाउडर क्रीम। बनो तो.....।
सायकल दौड़ावे बनो, मोटर चलावै
यो तो उड़नो चावै हवाजांज। बनो तो.....।

दूसरा गीत और जबरा है। इसमें बना ही नहीं बदलता है, बहू भी बदल गई है और ऐसी बदली है कि अपने ससुराल में अपने ढंग से, अपनी मर्जी से, बिना सास के भय से निर्भय बन रहती है। जो कार्य अब तक सास करती आई थी अब बहू आने के बाद वह काम बहू के जिम्मे आना चाहिये पर बहू उसे स्वीकार करे तब न!

विवाह के गीतों में लड़की की विदाई पर मुख्य रूप से सास को भलावण के तौर पर यह कहा जाता है कि वह हमारी बाई को बड़े लाड़-प्यार से रखे। उससे जो भी काम ले, प्रेम, स्नेह और उसके करने योग्य काम ही कराये लेकिन ये ही गीत गाने वाली अब समझ गई है कि सास तो आखिर सास है।

अपने लड़के के विवाह के बाद वह सारे गृह कार्यों से मुक्त होना चाहती है किन्तु उसकी तुलना में नई आने वाली बहू अधिक जागरूक, होशियार और अपने ढंग से अपना जीवन जीने वाली है सो उसने घर के वे काम करने बन्द कर दिये हैं जो उसकी शान से मेल नहीं खाते हैं तब मजबूर होकर सास उससे उन कामों को करने के लिए कहती है। बहू उत्तर देती है।

बहू की बेबाकी के तेवर गीत के माध्यम से वर्णित हुए हैं उन्हीं महिला समुदाय से जो स्वयं पारम्परिक रूप में जी रही हैं और बहू के आने पर उन सारे कामों से मुक्त होना चाहती हैं।

वे स्वयं समझ रही हैं कि सास का व्यवहार नई आने वाली बहू के साथ अनुकूल नहीं होता है। उनके बीच अनबन के बीज अपना प्रभाव दिये रहते हैं इसलिए वे स्वयं ही गीत रचना द्वारा बहू को बोल्ड कर जो काम उनके लिए भी कोई खास मायने नहीं रखते, उन्हें बहू से भी नहीं करवाने को तैयार करती हैं लेकिन माध्यम गीत बनते हैं। प्रत्यक्ष में तो यह सम्भव भी नहीं लगता।

उस समय की मैं आज जब तुलना करता हूं तो उन गीतों का प्रभाव भी मानता हूं कि वे धीरे-धीरे ही सही, कितने असरदायक बनकर चमत्कार दिखाते हैं। आज की बहुओं को देखिये, चूल्हा चौका उनसे उतना ही विलग होता लग रहा है। वे आधुनिकाएं होकर अब किसी पर आश्रित नहीं रहकर स्वयं अपना अस्तित्व देना चाह रही हैं।

चूल्हे चौके और अन्य गृहस्थीजनित कार्यों से भी मुक्त होकर बाइयों के भरोसे यह कार्य छोड़ दिया गया है। इससे उन्हें भी रोजगार और एक नये तरह का सहयोग-सम्बल मिलने से जो परिवार दबे-दबे से जीवन बसर करते थे, उनका स्पष्ट विकास होता लग रहा है।

वह गीत है जिसमें सास-बहू का संवाद है। सास प्रश्न कर रही है, बहू उत्तर दे रही है-

सासु कहै सुन मेरी बहुवड़
कचरा क्यूं नहीं काड़े?
मेरा ढोला गया अंगरेजी पढ़ै
म्हैं भी इसकूल जाऊं।
सासु कहै सुन मेरी बहुवड़ बरतन क्यूं नी मांजै?
म्हैरी गोरी हथेली में राज बसै
म्हैं भी पढ़ी लिखी हूं नार।
सासु कहै सुन मेरी बहुवड़ रसोई क्यूं नी करै?
म्होरा पिउ गया परदेश
म्होरी आंखों में धुंआ भरै।

उसके बाद ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, गीतों की गंगा भी नई-नवेली छलांगें लगा उफान देती लगती रहीं। आज की पूरी संस्कृति में सबकुछ ही नया, बदलाव होता दिखाई दे रहा है। गीतों में उसकी पकड़ देख भी उसका अध्ययन अचरज ही देता है। गांवों में आज भी घूंघट है पर अब घूंघटधारिणी का पूरा नाकनक्श ही दिखाई दे रहा है। - म. भा.

नगर निगम ने लिया नि:शुल्क अन्त्यैष्टि का जिम्मा

उदयपुर (सुजस)। कोरोना संक्रमितों की मृत्यु होने पर श्मशान स्थल पर अंत्येष्टि व्यय की व्यवस्था नगर निगम ने अपने हाथों में ले ली है। पिछले कुछ दिनों से अंत्येष्टि के लिए अवैध वसूली की शिकायतों को देखते हुए अब श्मशान स्थल पर कोरोना संक्रमितों की अंत्येष्टि के लिए नगर निगम ने नए सिरे से व्यवस्था की है।

नगर निगम आयुक्त हिम्मतसिंह बारहठ ने बताया कि शहर के श्मशान स्थलों में परंपरागत रूप से कुछ जातियां कई पीढ़ियों से अंतिम संस्कार करवाने का काम करती आई हैं। कोरोना संक्रमण की वजह से पिछले कुछ समय से माहौल ऐसा हो गया है कि श्मशान स्थलों पर अंतिम संस्कार करवाने के बदले कुछ लोग अवैध रूप से वसूली करने लगे हैं। नगर निगम ने अब श्मशान स्थलों का प्रबंधन अपने हाथों में लेकर शहर के सभी मुक्तिधामों पर सुबह 6 से दोपहर 1 और दोपहर से रात 8 बजे तक दो-दो कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई है। इधर स्वास्थ्य अधिकारी ने आमजन से मुक्तिधाम पर किसी भी प्रकार की वसूली न हो यह सुनिश्चत करने के लिए सफाई निरीक्षक, प्रभारी व जमादार को पाबंद किया है। इन कर्मचारियों को पीपीई किट, मास्क व ग्लव्ज उपलब्ध करवाने के आदेश जारी किए गए हैं। इसके अलावा निगम ने एमबी अस्पताल और ईएसआईसी से कोरोना संक्रमण की वजह से मृतकों के शव श्मशान स्थल तक पहुंचाने के लिए पहले से ही नि:शुल्क एम्बुलेंस लगा रखी है।

पोथीखाना

गज़ल संग्रह 'अपनी तलाश में'

याद आ रहा है लगभग 55 वर्ष पहले मशहूर शायर आबिद अदीब के सहयोग से जुलाई-अक्टूबर 1971 का सम्बोधन का उर्दू कविता अंक निकाला था।

उसके बाद 2006 में सम्बोधन ने गज़ल-अंक भेंट किया था। गज़ल ने आज सारी घेरेबन्दी तोड़दी है। आज गज़ल कई भाषाओं में लिखी जारही है और उसका कैनवास बहुत बड़ा होगया है।

'अपनी तलाश में' शैख अब्दुल हमीद का दूसरा गज़ल संग्रह है। पहला गज़ल संग्रह 'लम्हा-लम्हा ज़िन्दगी' बारह साल पहले प्रकाशित हुआ था। इसमें हमीद ने अलग-अलग रंग और तेवर की ग़ज़लों का सृजन किया है। 'अदबनामा' के सम्पादक नासिर अली 'नदीम' ने संग्रह को एक हसीन और बेहतरीन गुलदस्ता कहा है।

लिखा- 'इस तरह के खूबसूरत अशआर में, कुछ शेर तो इतने उम्दा और कसे हुए हैं कि उन्हें पढ़कर मीर, ग़ालिब, ज़ौक और ज़फर का अन्दाज़े बयाँ याद आ जाता है।' इन्सानियत, भाईचारा और प्राणीमात्र की सेवा का भाव इस संग्रह की गज़लों में जगह-जगह दृष्टिगोचर होता है। उनकी यह कामना कितनी श्रेष्ठ है। देखिये-

वफा, खुलूस, मोहब्बत का ये असर हो जाए।
ये काइनात सिमट कर एक घर हो जाए।

आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण प्रदूषण की गिरफ्त में है। कहीं पेड़ तो कहीं पहाड़ कट रहे हैं। कहीं तूफान आ रहे हैं तो कहीं भूकम्प तो कहीं ग्लेशियर पिघलरहे हैं। पूरी दुनिया त्रस्त है। ये दो अशआर मुलाहिज़ा फरमाइये-

(1) ज़बां नहीं है मगर हम भी सांस लेते हैं।
हमारा खूं न बहाओ, दरख़ूत बोलते हैं।।
(2) बिला वजह न कटे कोई पेड़ अब यारों।
कटे तो चार लगाओ दरख़ूत बोलते हैं।।

संसार की विभिन्न भाषाओं में लेखकों ने श्रद्धा से 'माँ' को याद किया है। यहाँ तक कहा गया है कि 'माँ' के क़दमों के नीचे जन्नत यानी स्वर्ग है। वर्तमान समय में 'माँ' के प्रति भले ही हमारे प्रेम में कमी आ गयी हो फिर भी माँ हमारी ज़िन्दगी का खास हिस्सा थी, है और कल रहेगी भी। अब्दुल हमीद ने माँ को अत्यन्त आदर और स्नेह से याद किया है-

- अब भी माँ मुझको बुलाती है जो बच्चा कह कर।
बस ये ममता मुझे बूढ़ा नहीं होने देती।।
- हाथ रख देती है माँ सर पे बड़ी शफ़क़त से।
मेरी पलकों को वो गीला नहीं होने देती।।
- माँ अगर खुश हो गई तो रब भी राज़ी हो गया।
वरना तुझ पे होगी लानत माँ की खिदमत छोड़ कर।।

कहने का तात्पर्य है कि गज़लकार शैख अब्दुल हमीद ने ज़िन्दगी के हर क्षेत्र में एक खूबसूरत दुनिया का स्वप्न संजोया है। संग्रह की गज़लें इन्सानियत, देशप्रेम, शिष्टाचार और भाईचारा जैसे अनेक मोर्चों पर एक जागरूक सैनिक की तरह तैनात हैं। बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित यह संग्रह 200 रूपये मूल्य का है।

- कमर मेवाड़ी

कोरोना में देव और दानव

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

टी.वी. एंकर रोहित सरदाना के महाप्रयाण की खबर ने तो अभी-अभी गहरा धक्का पहुंचाया है लेकिन मेरे पास उनकी ही उम्र के लगभग आधा दर्जनों लोगों की खबरें पिछले दो हफ्तों में आ चुकी हैं। ये वे लोग हैं, जिन्हें मैंने गोद में खिलाया है या जो कभी मेरे छात्र रहे हैं या जिनके माता-पिता मेरे घनिष्ट मित्र रहे हैं।

कई बुजुर्ग लोग भी जा चुके हैं। आपको भी अपने आत्मीय लोगों के बारे में ऐसी दुखद खबरें मिल रही होंगी। दूसरे शब्दों में सारा देश ही गमगीन हो रहा है। कौन होगा, जिसे ऐसी दुखद खबरें नहीं मिल रही होंगी। यह इतना विचित्र समय है, जब दिवंगत व्यक्ति के परिवार के लोग ही आपसे आग्रह करते हैं कि आप दाह-संस्कार में उपस्थित न हों।

मैंने कुछ ऐसे परिवार भी देखे हैं, जिनका मुखिया मरणासन्न है, और उस परिवार के जवान बेटे बीमारी का बहाना बनाकर घर में छिपे बैठे हैं। वे अपने बाप का हाल भी सीधे नहीं जानना चाहते। वे उनके मित्रों से अपने बाप का हाल पूछते रहते हैं लेकिन कुछ मित्र ऐसे भी देखे गए हैं, जो अपनी जान हथेली पर रखकर अपने मित्रों को अस्पताल पहुंचाते हैं और उनकी पूरी देखभाल भी कर रहे हैं।

अनेक समाजसेवी सज्जन ऐसे भी हैं, जो अनजान मरीज़ों को भी अस्पताल पहुंचाने की हिम्मत कर रहे हैं, मुफ्त ऑक्सीजन बांट रहे हैं, मरीजों के निर्धन परिजनों को वे भोजन करवा रहे हैं, अपने प्रिय मित्र की जान बचाने के लिए हजार मील कार चलाकर ऑक्सीजन सिलेंडर पहुंचा रहे हैं, अपने रिश्तेदारों और मित्रों के इलाज के लिए सैकड़ों लोगों से नित्य सम्पर्क कर रहे हैं, अपनी बचत के पैसे खर्च करके अपने परिचितों को काढ़ा और आयुर्वेदिक औषधियां बांट रहे हैं। इस संकट की अवधि में मनुष्य के दोनों रुप प्रकट हो रहे हैं, देव का भी और दानव का भी!

उनसे नीच दानव कौन हो सकता है, जो इस संकट काल में भी ऑक्सीजन सिलेंडर 80-80 हजार और रेमडेसवीर का इंजेक्शन सवा-सवा लाख रु. में बेच रहे हैं। इन नरपशुओं को, दानवों को, राक्षसों को सरकारें सिर्फ गिरफ्तार कर रही है, फांसी पर नहीं लटका रही हैं। वे जेल में पड़े-पड़े सरकारी रोटियां तोड़ते रहेंगे और सुरक्षित रहेंगे जबकि इन कालाबाजारियों की वजह से सैकड़ों लोग मौत के घाट रोज़ उतर रहे हैं।

यदि देश के 5-10 शहरों में भी इन कालाबाजारी राक्षसों को लटका दिया जाए तो देश में अब दवाइयों और ऑक्सीजन की कमी नहीं होगी।

कोरोना के समर्पित सेवक अस्पताल और डाक्टर्स

- राजेन्द्र गोयल -

इस कोरोना महामारी में अगर किसी चीज की महत्ता लोगों को समझ में आई है तो वह है अस्पताल और उनमें सेवा देने वाले डॉक्टर्स, नर्सिंग स्टाफ जो अपना पूरी जी-जान लगाकर मरीज को बचाने की कोशिश करते हैं और अपनी कोशिशों में कामयाब भी होते हैं। आज इस महामारी के समय सबसे महत्वपूर्ण सेवाओं में से एक है मरीज की सेवा। मरीज की सेवा करने वाले डॉक्टर्स भगवान का रूप और संसाधन उपलब्ध करवाने वाले हॉस्पिटल देवालय, जो नाजुक स्थिति में मरीज को क्षणिक संभावना के बाद भी मौत के मुंह से खींच लाने के लिए जुट जाते हैं।

जहां दुनिया डॉक्टर्स को भगवान का रूप मानती है और मन ही मन उनका धन्यवाद करती है वहीं कुछेक मानसिक उत्पीड़न के शिकार लोग अपने अपूर्ण मेडिकल गूगली ज्ञान या अपने सम्पूर्ण अज्ञान के चलते अथवा मरीज के परिजनों की नजर में थोथी सहानुभूति दिखाने या स्वयं को हीरो बनाने के चक्कर में डॉक्टर्स को बदनाम करने की साजिश करके फर्जी वीडियो बनाते हैं। दूसरी ओर ऐसे भी लोग होते हैं जो डॉक्टर्स और हॉस्पिटल को दिल से आभार देते हैं। उनमें से कुछ व्यक्त कर पाते हैं और कुछ नहीं भी परन्तु उनके दिल में सम्मान, आभार हमेशा रहता है।

डॉक्टर्स या नर्सिंगकर्मी प्रशंसा के भूखे नही हैं परन्तु वे जिन विषम और विपरीत परिस्थितियों में इस समय काम कर रहे हैं, उनका मनोबल बढ़ाया जाना हम सभी का प्रथम और अनिवार्य कर्त्तव्य होना चाहिए।

स्मृति शेष

चित्रकला विशारद वशिष्ट का निधन

उदयपुर (वि.)। चित्रकला के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियों के लेखक-समीक्षक डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ का 83 वर्ष की आयु में 22 अप्रेल को निधन हो गया। राजस्थान विश्वविद्यालय में रहते 1984 में उन्होंने मेवाड़ की चित्रकला परम्परा पर उल्लेखनीय ग्रन्थ लिखा जिसका लोकार्पण करते प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने कहा था कि राजस्थानी चित्रकला में वहां की माटी की गौरव गंध, शौर्य, वीरत्व तथा रणबांकुरों के अनुशासन का अर्क मिलता है।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि जब वे शोधानुसंधान कर रहे थे तब उनसे घनिष्ट परिचय हुआ जिससे वे लोक चित्रकला के विविध पहलुओं से परिचित हो सके। यही कारण था कि उन्होंने आत्मजा कहानी को अपने निर्देशन में अविवाहित बालिकाओं द्वारा श्राद्धपक्ष में प्रति संध्या को दीवाल पर गोबर-फूलों से निर्मित सांझीकला पर पीएच. डी. कराई।

डॉ. वशिष्ठ का ही यह प्रयत्न रहा कि उन्होंने अपने समय में पूरे विश्व में भारतीय चित्रकला की विशिष्ट पहचान बनाने का भगीरथ प्रयास किया। वे अन्तिम समय तक सक्रिय रहे। डॉ. विष्णुप्रकाश माली, डॉ. रघुनाथ शर्मा, डॉ. देव कोठारी, डॉ. ए. एल. दमामी, डॉ. कहानी भानावत तथा डॉ. चित्रसेन ने उन्हें श्रद्धांजलि दी।

आदर्श जैन श्रावक कालूलाल लसोड़ चल बसे

उदयपुर (वि.)। डूंगला में जन्में उदयपुर निवासी प्रसिद्ध धर्मजीवी समाजसेवी कालूलाल लसोड़ का 23 अप्रेल को आकस्मिक निधन हो गया। उनके सेवाभावी सुपुत्र विनोद लसोड़ ने बताया कि वर्षों से पिताश्री जैनदर्शन-सिद्धान्त की नियमपूर्वक परिपालना करते साधुजीवन ही व्यतीत कर रहे थे। प्रात: सामायिक प्रतिक्रमण के अलावा वे समय-समय पर व्रत-पौषध-उपवास-आयम्बिल तथा विशिष्ट अनुष्ठान करते साधु-सन्तों के दर्शन, व्याख्यान-श्रवण तथा धार्मिक अध्ययन किये सबके आदर्श बने रहे। अनेकों ने उनसे प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन को सहज, सरल, सात्विक एवं संयमपूर्ण बनाया।

सेवाभावी सुश्रावक चावत का निधन

चित्तौड़गढ़ (वि.)। यहां के साधुमार्गी जैन श्रावक संघ के संरक्षक वरिष्ठ धर्मप्राण देवीलाल चावत का 84 वर्ष की उम्र में 23 अप्रेल को निधन हो गया। प्रो. धनेश भाणावत ने यह सूचना देते हुए बताया कि पुलिस उप अधीक्षक की सेवापरांत वे समाजसेवा में गहरे रूप से जुड़ गये। अपनी अच्छी छवि और बेहतरीन उपलब्धियों के कारण वे दो बार राष्ट्रपति पदक से सम्मानित हुए और फिर आचार्य रामलालजी महाराज के सम्प्रदाय के सुदृढ़ सेवक के रूप में धर्माराधित जनसम्पर्की बने रहे।

डॉ. महेन्द्र भानावत के अनुसार सन् 1953-54 में छोटीसादड़ी जैन गुरुकुल में श्री चावत उनके घनिष्ट सहपाठी रहे। तब भी वे खेलकूद तथा सेवाभावी गतिविधियों में सदैव चुस्त सजग रह अग्रिम भूमिका लिए सुचर्चित रहे। वे उदयपुर-चित्तौड़ भी रहे। उनसे जब भी बात होती वे उदयपुर आकर मिलने की ही बात कहते पर ऐसा सम्भव नहीं हो सका।

शब्द रंजन परिवार की ओर से तीनों पुण्यात्माओं को हार्दिक श्रद्धांजलि।

दो तुक्तक

(1)
लोकतंत्र में जूतों की माला भी स्वागत करती
उल्टा जूता रख माथे पर, मटकी पानी भरती
आधी मूंछ उड़ाते हैं
भांड भड़ैती गाते हैं
इतनी तेरी नजर बुरी, गायें चारा नहीं चरती।

(2)
सात बान्दरे खेल रहे थे, खेल चांदनी में सटकर
इतने में एक डाकी आया, बोला सबसे ही कटकर
मास्क लगाओ
दूरी लाओ
जंगल में ही रहो भटकते, खाओ कंद मूल डटकर।

स्मृतियों के शिखर (122) : डॉ. महेन्द्र भानावत

श्रीनाथजी मंदिर से बाहर हवेली संगीत की प्रभावना

भारत की ध्रुवपद-धमार गायकी सर्वाधिक प्राचीन है। इस गायकी के अनेक धुरंधर गायक हमारे देश में हुए हैं जो राष्ट्रीय सार्वजनिक सम्मान एवं अलंकरणों से सम्मानित किये गए। इसी शैली की विशिष्ट गायकी 'हवेली संगीत' के नाम से प्रख्यात है। यह गायकी अब तक उपेक्षित सी रही। प्रचलित एवं पारम्परिक ध्रुवपद-धमार गायकी से कई अर्थों में यह अपना वैशिष्ट्य रखती है। इस शैली के गायक पुष्टिमार्गीय वैष्णव-परम्परा में आते हैं।

नाथद्वारा के श्रीनाथजी, कांकरोली के द्वारिकाधीशजी तथा किशनगढ़ के वैष्णव मन्दिरों में इस गायकी की परम्परा विकसित एवं पल्लवित हुई है। इसके गायक वंश-परम्परा में इस गायकी के उपासक माने जाते हैं। भगवान वल्लभाचार्य के समय में ही इन गायकों को मन्दिरों में संरक्षण प्राप्त हुआ। उन्हें ध्रुवपद-धमार की पुष्टिमार्गीय विशिष्ट परम्परा को अपनी विशिष्ट शैली में गाने की मर्यादा में रहना पड़ता है।

ये विशिष्ट गायक 'कीर्तनिये' कहलाते हैं जो कीर्तनकारों की विशिष्ट शैली में मन्दिरों में भगवत्-चरणों में इन पदों को अत्यन्त भक्ति-भाव से गाने में लीन रहते हैं। पारिश्रमिक के रूप में केवल इन्हें भगवान का प्रसाद ही प्राप्त होता है जिससे उनके समस्त परिवार का भरण-पोषण होता आया है। मन्दिरों के बाहर ये आज तक नहीं आए और न उन्हें किन्हीं अन्य विशिष्ट समारोहों में गाने की इजाजत ही मिली।

गहन अध्ययन के उपरान्त यह ज्ञात हुआ है कि ये गायक अपनी नौकरी समझकर भगवान के समक्ष नहीं गाते। परम भक्ति-भाव से अपनी कला का प्रदर्शन करना ही इनका मुख्य प्रयोजन रहा है। भारतवर्ष के अनेक कलामर्मज्ञों तथा संगीत-संस्थानों ने इस गायकी का अध्ययन एवं रिकॉर्ड कराने का प्रयास किया परन्तु वे इस काम में सफल नहीं हो सके।

ये गायक कभी भी इस बात के लिए तैयार नहीं हुए कि उनकी कला का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाय। उन्हें कभी अपने प्रचार प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान की भी चिन्ता नहीं रही। भगवान के विशिष्ट दर्शनों के समय उन्हें जगाने, सुलाने, खिलाने, पिलाने एवं गोपियों के संग राग-रंग में तल्लीन होने के अवसरों पर ही ये गायक विविध रागों में उपयुक्त पद गाते-बजाते हुए तल्लीन हो जाते हैं।

जिन रागिनियों और तालों का ये प्रयोग करते हैं, वे अद्‌भुत एवं अवर्णनीय हैं। इस गायकी में जहां स्वर एवं ताल-चयन का वैचित्र्य मिलता है, वहां शब्दों का लालित्य भी किसी प्रकार कम नहीं है। कीर्तनिये अन्य ध्रुवपद-धमार गायकों की भांति गायकी के तंत्र से बोझिल नहीं होते। ये तो अपने पदों को सहज भक्तिमूलक, भावात्मक और भावनात्मक ढंग से गाकर रसविभोर हो उठते हैं।

ये कलाकार कुमावत जाति के हैं। मिट्‌टी के बर्तन बनानेवाले और खेतों में काम करनेवाले ये साधारण व्यक्ति कीर्तन-गायकी की ओर किस प्रकार प्रवृत्त हुए, संगीत के शोधार्थियों के लिए यह अनुसंधान का विषय है।

राजस्थान के कई अन्य कुमावत भी इसी प्रकार के कला-व्यवसाय में निरत हैं। इनमें से कई कलाकार ब्रज की रास-मण्डलियों में वाद्य बजाते रहे। ब्रज के रासधारी विशिष्ट स्वरूपों का काम ब्राह्मण कुल के बालकों के अतिरिक्त इन कुमावतों को देना धर्म-विरूद्ध समझते थे। आज से कोई दो सौ वर्ष पूर्व इन कुमावत कलाकारों में जबर्दस्त आंदोलन चला और उन्होंने इन रासधारियों के विरूद्ध विद्रोह कर दिया तथा उन्हें छोड़कर अपनी स्वतंत्र रास-मण्डलियां स्थापित करदीं।

फुलेरा के रोइड़ो नामक गांव में कभी इनकी रास-मण्डलियां विद्यमान थीं। यही नहीं, राजस्थान की अन्य लोकनाट्य विधाओं में भी इन कुमावतों का प्रमुख हाथ रहा। इनमें कई अच्छे गायक, वादक एवं नर्तक हुए हैं। नाथद्वारा के श्री पुरुषोत्तमदास पखावजी देश के सर्वोच्च पखावजी माने गए। ऐसी मान्यता है कि कुमावतों को इस कला-प्रदर्शन का वरदान भगवान वल्लभाचार्य से ही प्राप्त हुआ था। ये कुमावत ढोलक, मृदंग आदि के खोल बनाते समय स्वयं उसके वादन में रूचि लेने लग गए। गायन की परम्परा के पीछे भी यही दलील सुनने को मिलती है।

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की जोधपुर में हुई एक बैठक में यह विचारणा बनी कि लोक-संगीत के अध्ययन, सर्वेक्षण के साथ-साथ हवेली संगीत के संरक्षण की ओर भी हमारा ध्यान जाना चाहिए।

इस बैठक में मैं भी राज्य सरकार द्वारा मनोनीत एक सदस्य था। यह कार्य भारतीय लोककला मण्डल को दिया गया। देवीलाल सामर लोककला मण्डल के संस्थापक थे किन्तु वे अकादमी के भी अध्यक्ष थे। उनके विशेष प्रयत्नों से पहलीबार मैं और अकादमी के कार्यकर्त्ता नाथद्वारा पहुंचे और हवेली संगीत के कलाकारों से भेंट कीगई किन्तु वे जानकारी देना तो दूर, हमसे मिलने को भी सहमत नहीं हुए।

ऐसी स्थिति में मन्दिर के मुखियाजी से मिलकर उन्हें यह भलीप्रकार समझाया गया कि अकादमी कोई व्यावसायिक संस्थान नहीं है। वह भी मन्दिर के समान ही धार्मिक कर्तव्य में जुटी हुई है। आपके पास वर्षों से संचित जो अमूल्य कीर्तन-सम्पदा है, यदि समय रहते उसका संरक्षण नहीं किया गया तो हम उससे वंचित हो जायेंगे। इस प्रकार की समझाइश और भगवान श्रीनाथजी की अनुकम्पा से हम लोग उन्हें मनाने को राजी होगए । ऐसा सुयोग बना कि हम उन गायक कलाकारों से करीब 25 घण्टे का रेकॉर्डिंग करने में सफल हुए।

बाद में 26 मार्च 1972 को हवेली संगीत के इन सभी विशिष्ट कीर्तनियों को भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर के रंगमंच पर आमंत्रित किया गया और विशिष्ट जन-समुदाय के समक्ष उनका कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। उनके जीवन में यह पहला अवसर था जबकि मन्दिर की देहरी से बाहर जनता-जनार्दन के समक्ष उनकी इस अमूल्य कला की पूर्ण धार्मिक आस्था तथा मर्यादा के साथ प्रस्तुति का भी प्रथम स्वर्णिम सौभाग्य था।

लेकिन इस प्रदर्शन से नाथद्वारा के वैष्णव सम्प्रदाय में बड़ी खलबली मचगई। कई कट्‌टर धर्मावलम्बियों ने नाथद्वारा के गोस्वामीजी महाराज को शिकायत के तार भेजे। कलामण्डल के इस आयोजन में ध्रुपद गायक सर्वश्री रामदासजी, अमृतलालजी, मन्नालालजी, ब्रजलालजी, पन्नालालजी, तोलारामजी तथा श्यामसुन्दरजी ने अपनी बेहतरीन प्रस्तुति से श्रोता-समुदाय को रोमांचित कर दिया। मृदंग वादक मूलचन्दजी एवं श्यामलालजी थे। सभी कलाकारों को पत्रं-पुष्पं के साथ उपरणा और सम्मानपत्र प्रदान कियागया।

सभी कलाकारों ने अपना मूक आभार प्रदर्शित कर यह अनुभव किया कि आज का दिन उनके लिए भी प्रभु श्रीनाथजी की कृपा से स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। दर्शकगण भी इतने भावुक और भक्तिमय हुए कि उनसे कुछ भी कहते नहीं बना। श्रोता-प्रस्तोता सभी जिस निष्ठा से आये उसी निष्ठा के साथ श्रीनाथजी के चरण-शरण की अनुभूति लिए विदा हुए।

हवेली संगीत के स्थापित सारंगी वादक अमृतलालजी कुमावत ने बताया कि हवेली संगीत में भक्तकवि के रूप में सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, कुंभनदास, चतुर्भुजदास, नन्ददास, गोविन्दस्वामी और छीतस्वामी; ये आठों कवि अष्टछाप के स्थापित कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके पदों का कीर्तन करने के कारण ही गायक 'कीर्तनिये' कहलाते हैं।

श्रीनाथजी मन्दिर में प्रत्येक वार-त्यौहार, तिथि तथा पर्वादि के पूजानुष्ठान निर्धारित हैं। मंगला से आरती और शयन के दर्शनों तक जिस प्रकार श्रृंगार स्वरूप निर्धारित हैं उसी तरह संगीत विधान भी निश्चित हैं। श्रीनाथजी के दरबार में गायन योग्य करीब दस हजार पद हैं जिनकी अलग-अलग राग-रागिनी, ताल, सुर, सरगम और वाद्य-वादन विधि है। इन पदों में अष्ट सखाओं के साथ ही तानसेन, हरिदास, हरिराय, गोसाई विट्‌ठलनाथ, पद्‌मनाथदास, तुलसीदास, धीवर कटहरिया, आसकर्णराज, धोदी मुसलमान और जात बीबी के पद भी सम्मिलित हैं।

अपने को ब्रज मण्डल के गांठोली गांव से नवनीत प्रियाजी के स्वरूप के साथ मेवाड़ आनेवाले परिवार का सदस्य बताने वाले अमृतलालजी हवेली संगीत को लोकसंगीत नहीं मानते। वे कहते हैं कि यह भगवद् लीलाओं का शास्त्रीय गायन है। तल्लीनता ही संगीत का नाम है। गाते-गाते कई बार तो हमें अपने अस्तित्व का ही भान नहीं रहता। हमारे लिए तब केवल 'त्वमेव सर्वं मम देव-देवा' रह जाता है। वे बताते हैं कि अन्यों की तरह वे भी प्रतिदिन चार बजे उठकर सारंगी पर कण्ठ-संगीत का रियाज करते हैं। श्रीनाथजी के मन्दिर के सभी दर्शनों में संकीर्तन हेतु जाते हैं। वे मानते हैं कि आज इस संगीत परम्परा को अपेक्षित प्रोत्साहन नहीं मिलरहा है।

कीर्तनकार श्यामसुन्दरजी ने नाथद्वारा में 20 फरवरी 1992 को अपने निवास पर एक भेंट में मुझे बताया कि भक्त और भगवान में भक्त सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भक्ति और भगवान तो जगाने पड़ते हैं। जैसे बन्द दुकान खोलनी, मांडनी, सजानी तथा साफ-सुथरी करनी पड़ती है, अगरबत्ती लगानी पड़ती है वैसे ही भक्ति जगानी पड़ती है। इसे जगाने के लिए वाद्य-वादन का स्वर बुलन्द करना पड़ता है। राग-रागनियों में गाना होता है। जोर-जोर का हेला देना पड़ता है। ऐसी स्थिति में जब भक्ति जागृत होती है तब भगवान का जागरण होता है।

उन्होंने बताया कि वैष्णव मन्दिर 'हवेली' नाम से जाने जाते हैं। वहां भगवान हवेली में विराजमान रहते हैं। कीर्तन करने वालों का अपना घराना है। उसी घराने में स्वत: ही उनकी सांगीतिक शिक्षा-दीक्षा होती है जैसे चिड़ियां के साथ रहकर उसका बच्चा खाने-पीने से लेकर उड़ने तक के संस्कार पा लेता है।

श्यामसुन्दरजी के पिता रामदासजी ध्रुपद धमार के साथ लखनऊ घराने की ठुमरी के भी निष्णात थे। उनका तबला, मृदंग, वीणा, वायलीन, जलतरंग आदि कई वाद्यों पर समान अधिकार था। रामदासजी के पिताश्री मथुरादासजी पर वृन्दावन के ग्वालियर बाबा की विशेष कृपा रही। बम्बई के मशहूर गायक भाई शंकर, लखनऊ के हारमोनियम वादक मास्टर श्यामदास का पूरा सान्निध्य उन्हें मिला वहीं नाथद्वारा के करेला व्रज निवासी टीकमदास, सूरदास तथा हीरालाल पालीवाल से भी बहुत कुछ सीखने को मिला।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 मई 2021

सम्पादकीय

बोली और भाषा

भाषा और बोली में बड़ा फर्क है। दोनों को एक समझना गलत है। प्रारम्भ में बोली आई फिर भाषा। भाषा बोली का विकसित रूप है। कोई एक बोली भाषा नहीं बनी। भाषा में अनेक बोलियों का समावेश होता है। बोली का क्षेत्र सीमित होता है। भाषा का क्षेत्र विस्तार लिए होता है। बोली की आयु अधिक लम्बी नहीं होती। भाषा दीर्घायु होती है। बोली का प्राय: साहित्य नहीं होता। भाषा का तो साहित्य होता ही है।

भाषा नियमों में बंधी रहती है। इसका अपना अनुशासन होता है। व्याकरण होता है। इससे किसी स्थान, प्रान्त अथवा राष्ट्र की पहचान होती है। यह सर्व स्वीकृत होती है। पठन-पाठन में प्रयुक्त होती है। सीमा विहीन होकर अन्य राष्ट्रों, विश्वविद्यालयों में मान्य होकर शोधानुसंधान का विषय बनती है। इससे मानव सभ्यता का आकलन होता है। कला-संस्कृति तथा अन्य विधाओं तथा व्यवस्थित विज्ञान-सम्मत बातचीत, संवाद तथा तुलनात्मक अध्ययन के अनेक पक्ष उद्घाटित होते हैं।

हम अक्सर भाषा को बोली और बोली को भाषा समझने की भूल कर बैठते हैं। ऐसा जहां भी होता है वहां द्वन्द्व शुरू हो जाता है। इससे अनेक तरह की समस्याएं पैदा होकर उलझन बढ़ जाती है। जैसे उलझा रेशम सुलझाया नहीं जा सकता वैसे ही भाषा-बोली का मसला 'अधिक अंधेरा जग करे मिली मावस रविचन्द' बनकर कोई समाधान नहीं दे पाता है। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द ने तो बहुत पहले ही लिख दिया था- 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।'

हमारा देश गांवों का देश कहा गया है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी लिखा था- 'भारतमाता ग्रामवासिनी।' गांव भी कई हैं। छोटे-छोटे गांवों से मिलकर चौखले बने हैं। उनकी अपनी बोली है। ऐसे चौखले ही कई हैं। इनकी अपनी बोली है। ये चौखले ही अंचल हैं। इन अंचलों से मिलकर प्रान्त बनता है। ऐसे एक प्रान्त में संभाग है। उनसे अधिक जिले हैं। उनमें तहसील। तहसील में उप तहसील। उप तहसील में पंचायत। उन सबकी अपनी बोली। इसीलिए कहावत है- 'बारा कोसां बोली बदले।'

इससे बोली और भाषा का हुलिया, नख-शिख, बनाव-ठनाव समझ में आ जायेगा। फिर मुहावरा, बोली लगना, बोली लगाना, बोली बोलना, बोली छोड़ना, बोली बन्द करना, बोली बन्द कराना, बोली मारना। इन सबके भिन्न-भिन्न अर्थ-आशय हैं। बोली और भाषा का मसला राजस्थान में सर्वोपरि होकर उघड़ा है। यह जबसे उघड़ा, शान्त नहीं हुआ है। कभी फुसफुस तो कभी तेजतर्रार तो कभी ठण्डेमण्डे। इसे हमने राजस्थानी भाषा नाम देकर संवैधानिक मान्यता की रगड़पट्टी में डाल दिया। इसके लिए अनेक बैठकें कीं। कई धरने दिये। अनेक ज्ञापन लिखे। बेहद आश्वासन मिले। अनगिनत उत्कंठाएं जगीं। आपसी थूकाफजीती भी कम नहीं हुई।

पीछे झांके तो 1914 में भाषाई सर्वेक्षण होकर एक पुस्तक आई- लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया। इसमें ढूंढ़ने पर भी कहीं राजस्थानी भाषा या बोली का नाम नहीं मिलता। दरअसल 1947 अर्थात् देश की आजादी से पूर्व तो राजस्थान अस्तित्व में ही नहीं था। इसकी जगह राजपूताना था जिसमें अलग-अलग रियासतें थीं और उन रियासतों में भिन्न-भिन्न बोलियां बोली जाती थीं।

इनका जो साहित्य मिलता है वह हाड़ौती, वागड़ी, ढूंढ़ाड़ी, शेखावाटी, मेवाती, डिंगल, मेवाड़ी, मारवाड़ी आदि का है। इनको वहां के अंचलों में बोली जाती है। एक अंचल की बोली दूसरे अंचल के रहने वाले नहीं बोल सकते न समझ ही सकते हैं फिर इनमें रहने वाले छोटे समुदाय, घुमक्कड़ समुदाय, आदिवासी समुदाय की अपनी अलग बोली है। उसी में उनका जीवन परिवेश, बोलचाल, रहनसहन, खानपान, लेनदेन, धंधापानी, संस्कृति-संस्कार, सरोकार, नेमनियम, दण्डविधान, उद्योगधंधे सब कुछ धड़ल्ले से चल रहे हैं।

राजस्थान हिन्दी भाषी राज्य है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और उनके पहले भी जो देश की आजादी के लिए प्रण-प्राण से लड़ते रहे वे सब हिन्दी-दां थे। गांधीजी ने तो कहा ही था- 'मेरे लिए हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।' सच में हिन्दी सदियों से राज-काज और जनता-जनार्दन की भाषा रही। सन्तों, भक्तों, समाज-सुधारकों, धर्माचार्यों और स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए हिन्दी को प्रबल, प्रखर, प्रांजल, प्रचलित तथा प्रभावी भाषा माना।

हाल ही में राष्ट्रदूत के 16 अप्रेल के 'विचार बिन्दु' में राजस्थान हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश पानाचन्द जैन ने अनेक दलीलों, प्रामाणिक तथ्यों तथा तर्कों से निष्कर्ष रूप में लिखा- ''हमारे लिए यह गर्व की बात है कि दुनियां की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। हिन्दी बोलने वाले 80 करोड़ से अधिक हैं। संसार के 150 से भी अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी की शिक्षा दी जाती है। एक दर्जन से अधिक देशों में हिन्दी बोली व समझी जाती है। राजस्थानी न तो बोली है और न इसका कोई प्राचीन साहित्य है और न इतिहास। राजस्थान हिन्दी भाषी राज्य है। यहां सम्पर्क भाषा हिन्दी है। राज्य के हिन्दी प्रेमियों से निवेदन है कि वे इसे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की याचिका में पक्षकार बनकर माननीय उच्च न्यायालय को संवैधानिक रूप से उचित निर्णय करने में सहयोग प्रदान करें।''

कोरोनाकाल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की संवेदना

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कोरोना के खिलाफ देश आज फिर बहुत बड़ी लड़ाई लड़ रहा है। कुछ सप्ताह पहले तक स्थितियां संभली हुई थीं और फिर ये कोरोना की दूसरी वेव तूफान बनकर आ गई। जो पीड़ा आपने सही है, जो पीड़ा आप सह रहे हैं, उसका मुझे ऐहसास है। इस बार कोरोना संकट में देश के अनेक हिस्से में ऑक्सीजन की डिमांड बहुत ज्यादा बढ़ी है। इस विषय पर तेजी से और पूरी संवेदनशीलता के साथ काम किया जा रहा है। केंद्र सरकार, राज्य सरकारें, प्राइवेट सेक्टर, सभी की पूरी कोशिश है कि हर जरूरतमंद को ऑक्सीजन मिले। देश के सभी डॉक्टरों, मेडिकल स्टाफ, सफाई कर्मचारी, एंबुलेंस के ड्राइवर, सुरक्षाकर्मी, पुलिसकर्मियों का काम सराहनीय है जो अपनी चिंता छोड़कर दूसरों की जान बचाने में जुटे हुए हैं।

जिन लोगों ने बीते दिनों में अपनों को खोया है, मैं सभी देशवासियों की तरफ से उनके प्रति संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। चुनौती बड़ी है लेकिन हमें मिलकर अपने संकल्प, हौसले और तैयारी के साथ इसको पार करना है। अब भारत में जो वैक्सीन बनेगी, उसका आधा हिस्सा सीधे राज्यों और अस्पतालों को भी मिलेगा। यह एक टीम वर्क है जिसके कारण हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू कर पाया। हम सभी का प्रयास, जीवन बचाने के लिए तो है ही, प्रयास यह भी है कि आर्थिक गतिविधियां और आजीविका, कम से कम प्रभावित हों।

मेरा युवा साथियों से अनुरोध है कि वो अपनी सोसायटी में, मौहल्ले में, अपार्टमेंट्स में छोटी-छोटी कमेटियाँ बनाकर कोविड अनुशासन का पालन करवाने में मदद करें। यदि हम ऐसा करेंगे तो सरकारों को न कंटेनमेंट ज़ोन बनाने की ज़रुरत पड़ेगी, न कर्फ्यू लगाने की, न लॉकडाउन लगाने की। आज की स्थिति में हमें देश को लॉकडाउन से बचाना है। मैं राज्यों से भी अनुरोध करूंगा कि वो लॉकडाउन को अंतिम विकल्प के रूप में ही इस्तेमाल करें। लॉकडाउन से बचने की भरपूर कोशिश करनी है। माइक्रो कन्टेनमेंट जोन पर ही ध्यान केंद्रित करना है।

आयकर गणना की नई एवं पुरानी पद्धति

-लोकेश कुमार बाबेल-

बजट 2020 में कर भुगतान की एक नई पद्धति की घोषणा की गई । इसके साथ पुरानी पद्धति से कर भुगतान की प्रणाली भी चालू रहेगी लेकिन करदाता को किसी एक पद्धति का चयन करना होगा । नई पद्धति का चयन करने पर सभी प्रकार की छूटें एवं लाभ समाप्त हो जाएंगे किंतु पुरानी पद्धति में सभी प्रकार के डिडक्शन, छूट एवं लाभ प्राप्त होंगे। नई कर भुगतान प्रणाली में मिलनेवाली छूटें इस प्रकार हैं-

(1) 50,000/- तक के स्टैंडर्ड डिडक्शन की वेतन भोगी कर्मचारियों एवं पेंशनर्स को मिलनेवाली छुट
(2) मकान किराया भत्ता की छूट
(3) गृह ऋण पर चुकाया गया ब्याज जो कि अधिकतम 2,00,000/- या 3,50,000/- तक प्राप्त होता है, की छूट
(4) लीव ट्रैवल कंसेशन जोकि 2 वर्ष में एक बार मिलता है, की छूट
(5) नेशनल पेंशन स्कीम (एनपीएस) में निवेश की गई राशि की छूट
(6) मेडिकल इंश्योरेंस प्रीमियम 25,000/-तक एवं सीनियर सिटीजन के मामले में 50,000/- तक की छूट
(7) सेविंग बैंक अकाउंट के ब्याज पर 10,000 तक की छूट
(8) सीनियर सिटीजन के मामले में 50,000/- तक की धारा 80 टीटीबी के तहत छूट
(9) धारा 88 ई के तहत शिक्षा लोन पर चुकाये गए ब्याज की छूट
(10) धारा 80 डीडी या 80 यू के तहत विकलांगता के कारण मिलने वाली छूट
(11) कुछ निर्देश बीमारियों के संबंध में मिलने वाली छूट

उपरोक्त सभी छुंटें, डिडक्शंस एवं लाभ पुरानी कर भुगतान पद्धति में जारी रहेंगे। नई कर भुगतान प्रणाली में निम्न छूटें/लाभ जारी रहेंगे-

(1) किराए पर मिलने वाले 30 प्रतिशत स्टैंडर्ड डिडक्शन की छूट
(2) कृषि आय पर छूट 03. बीमा पॉलिसी की परिपक्वता पर प्राप्त राशि
(3) 5 लाख तक के रिट्रेंचमेंट कंपनसेशन
(4) स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के तहत प्राप्त 5 लाख तक की राशि
(5) सेवानिवृत्ति के दौरान प्राप्त लीव एनकैशमेंट

उपरोक्त छूटें/ लाभ पुरानी कर प्रणाली पद्धति में भी पहले से ही लागू हैं। नई एवं पुरानी कर पद्धति अपनाने की शर्तें इस प्रकार हैं-

(1) नौकरी पेशा एवं पेंशनर हर साल अपनी सुविधा अनुसार नई से पुरानी एवं पुरानी से नई व्यवस्था में जा सकेंगे किंतु उनके किसी प्रकार की व्यावसायिक इनकम नहीं होनी चाहिए।
(2) व्यापारियों एवं व्यावसायिक आय वालों को हर साल नई एवं पुरानी पद्धति में स्विच करने की इजाजत नहीं होगी व्यापार/व्यावसायिक आय वाला एक बार नई पद्धति अपना लेता है तो उसे हमेशा नई पद्धति में ही कर भुगतान करना होता है। उसे सिर्फ एक बार पुरानी पद्धति में लौटने की स्वीकृति होगी किंतु उसके पश्चात वह भविष्य में नई कर प्रणाली में नहीं आ सकता है। उसे पुरानी कर प्रणाली के आधार पर ही कर का भुगतान करना होगा।
(3) नई कर प्रणाली अपनाने के पश्चात पिछली प्रणाली में मिलने वाले अधिकतम डिडक्शन से हाथ धोना पड़ेगा। उन्हें ना तो मकान किराए भत्ते की छूट प्राप्त होगी, ना धारा 80 के तहत निवेश की छूट प्राप्त होगी और ना ही एनपीएस में निवेश की गई राशि की छूट मिलेगी तथा मेडिक्लेम एवं लीव ट्रैवल कंसेशन की छूट भी प्राप्त नहीं होगी।

एक सारणी के अनुसार इसकी तुलना इस प्रकार है-

वार्षिक आय	पुरानी पद्धति	नई पद्धति
(1) 2.50 लाख रुपए तक की आय	00 प्रतिशत	00 प्रतिशत
(2) 2.50 लाख रुपए से 5 तक लाख रुपए	5 प्रतिशत	5 प्रतिशत
(3) 5 लाख रुपए से 7.5 लाख रुपए तक	20 प्रतिशत	10 प्रतिशत
(4) 7.50 लाख रुपए से 10 लाख रुपए तक	20 प्रतिशत	15 प्रतिशत
(5) 10 लाख रुपए से 12.50 लाख रुपए तक	30 प्रतिशत	20 प्रतिशत
(6) 12.50 लाख रुपए से 15 लाख तक	30 प्रतिशत	25 प्रतिशत
(7) 15 लाख रुपए से अधिक	30 प्रतिशत	30 प्रतिशत

नई कर पद्धति व्यापार एवं पेशे से आयवालों के लिए ज्यादा उचित है क्योंकि उनका विभिन्न बचत योजनाओं में अक्सर इन्वेस्टमेंट कम ही होता है तथा नई योजना में टैक्स स्लैब कम होने से व्यापार एवं पेशे की आयवालों के पास अधिक पैसा खर्च करने के लिए बचता है जो कि उनके व्यापार के लिए अच्छा है। पुरानी कर प्रणाली वेतन भोगी कर्मचारियों एवं पेंशनर्स के लिए ज्यादा उपयुक्त है क्योंकि उनका विभिन्न योजनाओं में इन्वेस्टमेंट ज्यादा होता है तथा उन्हें आयकर कानून के तहत विभिन्न प्रकार की अतिरिक्त छूटें भी प्राप्त होती हैं।

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

PIMS हॉस्पिटल, उमरड़ा

हमारे सुपरस्पेशियलिस्ट रखें हर पल आपके स्वास्थ्य का खयाल...

नशा मुक्ति एवं परामर्श केन्द्र

PIMS हॉस्पिटल, उमरड़ा

यहाँ पर हर प्रकार का नशा जैसे–

शराब, गांजा, स्मैक, चरस, गोली, भांग, अफीम,स्मैक, ब्राउन शुगर, हेरोइन तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी, कैप्सूल, सीरप, इंजेक्शन, पेट्रोल / डीजल / केरोसीन, फ्लूड, मोबाईल/ इन्टरनेट एडिक्शन आदि का उपचार व परामर्श दिया जाता है।

नशा एक बुरी लत है तथा यह एक Progressive Disease है।
परिवार में किसी को भी उपरोक्त में से किसी भी प्रकार का नशा होने पर उपचार के लिए PIMS हॉस्पिटल, उमरड़ा के डी–एडिक्शन सेंटर में तुरंत सम्पर्क करें

नशे की लत के सामान्य लक्षण

1.अकेला रहना या परिवार के सदस्यों से कम या नहीं मिलना–झुलना।
2.व्यवहार में बदलाव आना।
3.मनोदशा (Mood) में परिवर्तन आना।
4.पारिवारिक, व्यवसाय एवं सामाजिक जिम्मेदारियों की अपेक्षा।
5.चोरी करना, जोखिम उठाने का व्यवहार
6.दैनिक कार्यकलाप व्यवसाय, पढ़ाई आदि की उपक्षा
7.नींद की कमी या नींद का ज्यादा आना
8.कब्ज, पेट दर्द या स्ववेम उवजपवद होना
9.शरीर में दर्द या खिचाव होना।

व्यसन मुक्ति विशेषज्ञ

डॉ. बी. के. पुष्प
मनोचिकित्सक

इंद्रपाल सालवी
मनोवैज्ञानिक

डॉ. सुदीप चौधरी
कार्डियोथोरेसिक व वेस्कुलर सर्जन

डॉ. सुभाब्रता दास
सर्जिकल ऑन्कोलॉजिस्ट (कैंसर सर्जन)

डॉ. अनुराग पटेरिया
न्यूरो एवं स्पाईन सर्जन

डॉ. कौशल कुमार गुप्ता
यूरोलोजिस्ट

डॉ. अतुल मिश्रा
पीडियाट्रिक सर्जन

डॉ. महेश जैन
इन्टरवेंशनल कार्डियोलाजिस्ट

डॉ. करन कुमार
हेपेटोलॉजिस्ट

डॉ. राजेश खोईवाल
न्यूरोलॉजिस्ट

डॉ. एम. पी. अग्रवाल
प्लास्टिक एवं कॉस्मेटिक सर्जन

NABH PRE ACCREDITED

उपलब्ध सेवाएं

- कार्डियक केयर सेन्टर
- न्यूरो सर्जरी
- नेफ्रोलोजी
- जनरल मेडिसिन
- टी.बी. चेस्ट एवं श्वास रोग
- प्रसूति एवं स्त्री रोग
- हड्डी एवं जोड़ रोग
- कैंसर सर्जरी
- यूरोलॉजी
- गेस्ट्रोएंटरोलॉजी
- पीड्रियाट्रिक सर्जरी
- मनोरोग चिकित्सा
- नेत्र रोग
- पेन मैनेजमेन्ट क्लिनिक
- न्यूरोलॉजी
- प्लास्टिक एवं बर्न सर्जरी
- जनरल एवं लेप्रोस्कॉपिक सर्जरी
- नाक, कान, गला रोग
- बाल चिकित्सा
- त्वचा एवं चर्म रोग
- दंत चिकित्सा

800 बेडेड मल्टी सुपर स्पेशिलिटी हॉस्पिटल
70 बेडेड आईसीयू
16 ऑपरेशन थियेटर
18 बेडेड डायलिसिस युनिट

24/7 EMERGENCY SERVICE आपातकालीन सुविधाएँ उपलब्ध

0294-3510000

14.50 लाख से अधिक मरीजों का सफल उपचार | 800 बेडेड हॉस्पीटल | 70 बेडेड आई.सी.यू. | 18 बेडेड डायलिसिस युनिट | 16 ऑपरेशन थियेटर

आमजन हेतु उपलब्ध सरकारी सुविधाएं

- आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना
- ESI राज्य कर्मचारी बीमा के अन्तर्गत उपचार
- राजस्थान एड्स कन्ट्रोल सोसायटी
- परिवार नियोजन एवं जननी सुरक्षा योजना
- डॉट्स टी.बी. एवं क्षय रोग

रोगियों के लिए नि:शुल्क बस व एम्बुलेंस सुविधा उपलब्ध है–
सम्पर्क करें : 9587890137

डायग्नोस्टिक विश्वस्तरीय मशीनों द्वारा जांच व निदान, MRI (1.5 T), CT-Scan (128 Slice), CD4 Count की सुविधा उपलब्ध, अल्ट्रासाउण्ड, इको कार्डियोग्राम, एलर्जी टेस्ट (Phadia 100), Hb-Vario (HPCL), ADVIAXP (CLIA), TB-PCR (Gene Xpert),NABL द्वारा मान्यता प्राप्त VIROLOGY LAB

▸मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर ▸आई.सी.सी.यू. ▸आई.सी.यू. ▸पी.आई.सी.यू. ▸एन.आई.सी.यू. ▸कोविड आई.सी.यू. ▸आइसोलेशन वार्ड ▸बर्न आई.सी.यू. ▸ब्लड बैंक

साई तिरूपति विश्वविद्यालय, उमरड़ा, उदयपुर

अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 Phone: 0294-3510000, Mob. 8696440666

Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in
Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in

बाजार / समाचार

सुब्रत रॉय सहारा कोविड-19 से मुक्त

उदयपुर (वि.)। सहारा इंडिया परिवार के मैनेजिंग वर्कर व चेयरमैन सहाराश्री सुब्रत रॉय सहारा की कोविड-19 की जाँच रिपोर्ट अब निगेटिव पाई गई है। आरटी-पीसीआर टेस्ट की रिपोर्ट में उनके निगेटिव होने की पुष्टि हो गई है। कोविड से मुक्त होने के बाद सहाराश्री ने कहा कि मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने मेरे स्वास्थ्य लाभ की कामना की। उन्होंने सभी से आग्रह भी किया है कि हर व्यक्ति अपने आपको इस खतरनाक वायरस से बचाये और जितनी जल्दी सम्भव हो वैक्सीन लगवा लें।

जेके ऑर्गेनाइजेशन का टीकाकरण अभियान शुरू

उदयपुर (वि.)। कोविड-19 सहायता मानकों और इस महामारी से लडने की अपनी प्रतिबद्धता के तहत भारतीय प्रोद्योगिकी दिग्गज जेके ऑर्गेनाइजेशन अब 'मिशन क्रिटिकल' रूख को अपनाते हुए संस्थान के सभी हितधारकों का शीघ्र टीकाकरण सुनिश्चित कर रही है।

जेके ऑर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष भरत हरि सिंघानिया ने कहा कि ऑर्गेनाइजेशन ने अपने सभी कर्मचारियों और व्यवसायिक भागीदारों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, सभी के टीकाकरण का एक सिस्टम तैयार किया है। अभी तक ग्रुप 12000 लोगों का टीकाकरण करवा चुका है। मई से सभी व्यस्कों को टीकाकरण की मंजूरी दिए जाने के बाद, अब ग्रुप ने 40000 से ज्यादा लोगों के टीकाकरण का लक्ष्य रखा है। 'मिशन क्रिटिकल' के तहत संस्थान की सर्वोच्च प्राथमिकता इस बात की है कि टीकाकरण सुविधा कर्मचारियों की पहुंच के अन्दर हो, साथ ही सभी सुरक्षा मानकों की पालना भी हो।

स्टेलेंटिस द्वारा नेतृत्वकारी नियुक्तयां

उदयपुर (वि.)। स्टेलेंटिस इंडिया और एशिया पैसिफिक ने भारत के भीतर और आसपास के क्षेत्रों में अपने संचालन के लिए प्रमुख नेतृत्वकारी नियुक्तियों की घोषणा की है। श्री रोलैंड बुशर को स्टेलेंटिस इंडिया का मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक नियुक्त किया गया है।

डॉ. पार्थ दत्ता ने भारत और एशिया प्रशांत क्षेत्र में इंजीनियरिंग, डिजाइन, अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) के संचालन की जिम्मेदारी संभाली है। 2019 से पार्थ ने नए जीप कम्पास के सफल लॉन्च और स्थानीय रूप से असेंबल किए गए जीप रैंगलर सहित एफसीए इंडिया के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक के रूप में नेतृत्व किया है। स्टेलेंटिस इंडिया और एशिया पैसिफिक के मुख्य परिचालन अधिकारी कार्ल स्माइली ने कहा कि रोलैंड को भारत में बतौर मुख्यन कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक उनकी नई भूमिका के साथ उन्हें व्यापक वाणिज्यिक अनुभव प्राप्त है। वह वैश्विक रूप से कंपनी के प्रमुख विकास बाजार भारत में स्टेलेंटिस के ब्रांड, नेटवर्क और व्यापार के विकास एवं विस्तार के लिए जिम्मेदार होंगे।

कोरोना पॉजिटिव की ट्रेक्योस्टमी कर जान बचाई

उदयपुर (वि.)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में गंभीर कोरोना पॉजीटिव मरीजों का शीघ्र उपचार करने के लिए कोरोना के दौरान ही ट्रेक्योस्टमी कर जीवन बचाया जा रहा है। हॉस्पिटल में नाक, कान, गला रोग विशेषज्ञ डॉ. एस. एस. कौशिक और उनकी टीम ने उदयपुर निवासी कोरोना पॉजिटिव मरीज की ट्रेक्योस्टमी कर जान बचाई है।

डॉ. एस. एस. कौशिक ने बताया कि कौरोना के दौरान गंभीर मरीजों को श्वांस लेने मे बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। आमतौर पर अधिकांश अस्पतालों में मरीज के कोरोना नेगेटिव होने का इन्तजार किया जाता है। उसके बाद ट्रेक्योस्टमी की जाती है। पारस जे. के. हॉस्पिटल में हम मरीज के कोरोना पॉजिटिव रहने के दौरान ही अत्याधुनिक संसाधनों के द्वारा मात्र 3 से 4 मिनिट में ट्रेक्योस्टमी कर देते हैं।

50 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर भेंट

उदयपुर (वि.)। श्री सीमेन्ट विभिन्न प्रयासो से कोरोना से बचाव एवं जागरूकता के साथ मानव जीवन की रक्षा हेतु सहयोग कर रहा है। इस मुश्किल समय में सामाजिक दायित्व निभाते हुए ऑक्सीजन की कमी को दूर करने के लिए श्री सीमेन्ट प्रबंध निदेशक एच. एम.बांगड़ के मार्गदर्शन में कम्पनी द्वारा जयपुर में राजस्थान सरकार को 50 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर भेंट दिये गए।

जेडीए कमिश्नर गौरव गोयल तथा श्री सीमेंट के उपाध्यक्ष नरीप बाजवा एवं अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में 50 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर सरकार को सुपुर्द किये गये। कम्पनी के प्लांट द्वारा प्रतिदिन 250 निःशुल्क ऑक्सीजन सिलेंडर की रिफिलिंग करवाकर राजकीय अस्पताल को 8-10 महीनों से मुहैया करवायी जा रही है।

कम्पनी के पूर्णकालिक निदेशक पी. एन. छंगाणी, अध्यक्ष संजय मेहता एवं संयुक्त उपाध्यक्ष अरविंद खींचा ने बताया कि कम्पनी राष्ट्र के प्रति सेवा एवं संकटकाल में सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाने हेतु दृढ संकल्पित है।

अनिल अग्रवाल द्वारा 150 करोड़ की घोषणा

उदयपुर (वि.)। वेदांता के चैयरमेन अनिल अग्रवाल ने कोविड 19 की दूसरी लहर से राहत एवं बचाव हेतु देश में सहायता के लिए 150 करोड़ के योगदान की घोषणा की है। पिछले वर्ष वेदांता समूह द्वारा 201 करोड़ रूपयों का सहयोग किया गया था। भारत सरकार और राज्य सरकारों द्वारा किए जा रहे प्रयासों के सहयोग में, वेदांता लिमिटेड देश के 10 शहरों में 1,000 क्रिटीकल केयर बेड की व्यवस्था करेगा। ये बेड मान्यताप्राप्त और प्रतिष्ठित चिकित्सालयों के साथ मिलकर बनाए जाएंगे। प्रत्येक जगह पर 100 बेड होंगे जो कि वातानुकूलित एवं बिजली की सुविधायुक्त होंगे। क्रिटीकल केयर में 90 बेड ऑक्सीजन सपोर्ट एवं 10 बेड वेंटिलेटर सपोर्ट सुविधायुक्त होंगे।

वेदांता के चैयरमेन अनिल अग्रवाल ने कहा कि मैं कोविड -19 की दूसरी लहर के प्रभाव और बहुमूल्य जीवन को खोने के बारे में गहराई से चिंतित और दुखी हूं। वेदांता समूह महामारी से लड़ने के लिए 150 करोड़ रुपये के योगदान के साथ आगे आया हैं और हम इस कठिन परिस्थिति में समुदाय और सरकार के साथ मजबूती से खड़े हैं। वेदांता डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों के लिए आवश्यक चिकित्सा उपकरण भी प्रदान करेगा। क्रिटिकल केयर बेड की अतिरिक्त क्षमता राजस्थान, ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड, गोवा, कर्नाटक और दिल्ली एनसीआर राज्यों में बनाई जाएगी। कंपनी द्वारा पहले चरण में 14 दिनों में प्राथमिक सुविधाओं और शेष सुविधाओं को 30 दिनों में प्रारंभ कर दिया जाएगा। ये सुविधाएं 6 माह तक जारी रहेगी। कंपनी वर्तमान में अपने व्यावसायिक स्थानों पर कोविड रोगियों के लिए 700 बेड का सहयोग कर रही है।

जीवंता ने दिया प्रीमेच्योर शिशु को नया जीवन

उदयपुर (वि.)। जीवन्ता चिल्ड्रन हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने एक प्रीमेच्योर शिशु को नया जीवन दिया है।

नवजात शिशु विशेषज्ञ डॉ. सुनील जांगिड़ ने बताया कि उदयपुर निवासी माया पत्नी देवसिंह (परिवर्तित नाम) शादी के 18 साल बाद गर्भवती हुई। गत दिनों माया और उसका पूरा परिवार कोरोना पॉजिटिव हो गया। इस पर उन्हें ईएसआई हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। ईएसआई हॉस्पिटल में ही गर्भावस्था के 30 सप्ताह (साढ़े सात महीने) में माया को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई।

कोरोना के चलते कोई प्राइवेट हॉस्पिटल्स डिलीवरी करने तैयार नहीं था। ऐसे में कहीं से पता चला कि जीवन्ता हॉस्पिटल में ऐसे बच्चों की अच्छी देखभाल होती है।

डॉ. जांगिड़ ने बताया कि हमारे पास फोन आया कि माँ कोरोना से ग्रसित है। बच्चे को जन्म के बाद नर्सरी में शिफ्ट करना चाहते हैं। इस पर हमारी टीम ने तुरंत कोविड-19 के नियमों के तहत आइसोलेशन एनआयसीयू में सेपरेट एंट्री और एग्जिट इनक्यूबेटर, वेंटीलेटर की तैयारी की। जिस समय शिशु को भर्ती किया गया उस वक्त उसका वजन 1400 ग्राम था। सांस लेने में परेशानी हो रही थी। इस पर हॉस्पिटल डॉ. जांगिड़ के साथ डॉ. निखिलेश नैन, डॉ. विनोद, डॉ. अमित एवं उनकी टीम ने शिशु को कृतिम श्वसनयंत्र पर रखा।

डॉ. जांगिड़ ने बताया कि जन्म समय से पूर्व होने एवं कम वजन के चलते शिशु को बचाना एक चुनौती था। शारीरिक सर्वांगीण विकास पूरा नहीं होने पर शिशु को पोषक तत्व ग्लूकोज़, प्रोटीन्स नसों द्वारा दिए गए। बून्द-बून्द दूध नली द्वारा दिया गया। 15 दिनों तक शिशु को कृत्रिम सांस पर रखा गया और 22 दिनों तक आईसीयू में देखभाल की गयी। आज शिशु का वजन 1590 ग्राम है और वह स्वस्थ है।

मिशन मस्टर्ड 2025 - वेविनार सम्पन्न

उदयपुर (वि.)। पिछली सदी में हरित और श्वेतक्रांति के साक्षी होने के बाद भारत इस बार कृषि क्षेत्र में पीली क्रांति (तिलहन उत्पादन) की ओर अग्रसर है। क्रांति का नेतृत्व सरसों द्वारा किया जाएगा। इसे जल्द ही देश के शीर्ष तिलहन का ताज पहनाया जा सकता है। यह बात सॉल्वेंट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित वेबीनार में खाद्य तेल उद्योग के दिग्गजों और प्रतिष्ठित सरकारी गणमान्य लोगों द्वारा आयोजित चर्चा में उभर कर सामने आई।

एसएई के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी, ने कहा कि एसईए सजग रूप से घरेलू तेल उत्पादन को बढ़ाकर खाद्य तेलों में भारत की आयात निर्भरता को कम करने के लिए काम कर रहा है। इस उद्देश्य के लिए, एसईए ने मिशन मस्टर्ड शुरू किया है।

खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग के सचिव सुधांशु ने कहा कि सरसों पर प्रतिफल लगभग 31000 रूपये प्रति हेक्टेयर है, जो कि गेहू के लिए 26000 रूपये प्रति हेक्टेयर और चावल के 22000 रूपये प्रति हेक्टेयर के मुकाबले ज्यादा है।

तिलहन मिशन की प्रमुख और कृषि मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती शुभा ठाकुर ने कहा कि सरकार भी सरसों की खेती को बढ़ावा देने के लिए उत्सुक है। सरसों मिशन सरकार द्वारा पहले ही लांच किया जा चुका है।

अंगुश मल्लिक, सीईओ और प्रबंध निदेशक, अदानी विल्मर लि. ने कहा कि सरसों में तेल की मात्रा 40 प्रतिशत अधिक है। इसमें 36 प्रतिशत प्रोटीन है और यह बहुत कम पानी की आवश्यकता वाली एक जलवायु-स्मार्ट फसल है।

विजय डाटा, अध्यक्ष, एसईए रेप-मस्टर्ड प्रमोशन काउंसिल ने कहा कि चालू विपणन वर्ष में भारत का सरसों का उत्पादन, जो कि अक्टूबर से शुरू हुआ है से 8.5 से 9 मिलियन टन के शीर्ष स्तर पर पहुचने को तैयार है, जो एक उच्च रिकॉर्ड है। आने वाले वर्षों में सरसों को भारत का शीर्ष तिलहन बना देगा।

कानोड़ जवाहर जैन शिक्षण संस्थान में बने ऑक्सीजन युक्त 5 कोरोना वार्ड

उदयपुर (वि.)। जवाहर विद्यापीठ जैन शिक्षण संस्थान, चिकित्सा विभाग एवं नगर पालिका कानोड़ के सहयोग से कानोड़ में ही कोरोना रोगियों व गंभीर कोरोना रोगियों के लिये ऑक्सीजन युक्त कोरोना वार्ड बनाकर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करा दी गई।

संसथान के संचालक डॉ. नरेन्द्र धींग ने बताया कि समाजसेवी भीमसिंह चुण्डावत, पालिका उपाध्यक्ष नरेन्द्र बाबेल, पालिका के पूर्व नेता प्रतिपक्ष दिलीप सोलंकी, पार्षद अमिताभ दक, गिरिराज सुथार के सहयोग से कोरोना रोगियों के लिये जवाहर जैन शिक्षण संस्थान में 5 कमरों को ऑक्सीजन युक्त कोरोना वार्ड में तब्दील कर दिया गया है। इस सुविधा के उपलब्ध हो जाने से अब कानोड़ के कोरोना रोगियों को उदयपुर रेफर नहीं किया जायेगा।

उन्होंने बताया कि पूर्व में इस प्रकार के रोगियों को ऑक्सीजन की कमी के कारण उदयपुर रेफर किया जाता था। भीमसिंह चुण्डावत ने कहा कि कानोड़ तहसील के लिये हर संभव सहायता उपलब्ध करायी जाती रहेगी।

उदयपुर की स्मृतियां लिए कीर्ति राणा (3)

पॉवर लिफ्टिंग खिलाड़ी माला सुखवाल की मदद :

उदयपुर में रहते टीम के सहयोग का ही परिणाम था कि पाठकों को जोड़ने, उनका विश्वास जीतने के नित नए प्रयोग भी खूब किए। महाकाल की कृपा भी रही कि ये सभी प्रयोग ना सिर्फ सफल रहे बल्कि आम पाठकों का यह विश्वास भी मजबूत हुआ कि शहर की आवाज तो भास्कर ही है।

मुझे याद आ रही है पॉवर लिफ्टिंग में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड जीतकर राजस्थान का नाम रोशन करने वाली उदयपुर की

बेटी माला सुखवाल का नाम। हुआ यूं कि अपने मामा के साथ माला सुखवाल एक शाम उदयपुर भास्कर ऑफिस में आईं। मामा ने ही बताया, इसे इंटरनेशनल पॉवर लिफ्टिंग काम्पिटिशन में जाना है लेकिन फ्लाइट खर्च की राशि (करीब सवा लाख रुपये) का इंतजाम नहीं हो पा रहा है। हमने समाज सहित अन्य संगठनों से भी बात कर ली लेकिन किराए की राशि अधिक होने से कोई मदद नहीं कर पा रहे हैं। दृढ़ संकल्पित माला का दावा था यदि किराए का इंतजाम हो जाए तो मैं गोल्ड मैडल जीत कर आऊंगी।

मैंने सिटी चीफ प्रकाश शर्मा से कहा, इनसे पूरा मामला समझलो और समाचार बनाओ जिसमें शहर के भामाशाहों से 'भास्कर की अपील' रहेगी कि उदयपुर की बेटी का सपना पूरा करने के लिए आर्थिक मदद करें। माला और उसके मामा से इस आशय के समाचार पर दस्तखत भी करा लिए। उन्हें यह विश्वास भी दिलाया कि इस अपील से भी यदि पर्याप्त धनराशि नहीं जुट पाई तो भास्कर प्रबंधन मदद करेगा।

अगले दिन उदयपुर की बेटी को आर्थिक मदद का समाचार प्रकाशित हुआ। दिए गए प्रकाश शर्मा के मोबाइल नंबर पर लोगों के फोन भी आने लगे। मैं उनसे रिस्पॉंस का फालोअप लेकर उत्साहित था कि पहल का असर हो रहा है।

शाम को ऑफिस पहुंचा। कुछ देर बाद ही माला के मामा सहित अन्य परिजन भनभनाते हुए केबिन में दाखिल हुए। उनका कहना था, इस तरह की अपील छापकर आपने तो हमें समाज में भिखारी साबित कर दिया। कलेक्टर के फोन पर हिन्दुस्तान जिंक वालों ने 50 हजार की मदद का वादा किया था लेकिन अब वो कह रहे हैं अब भास्कर वालों से ही मदद लीजिए।

उन्हें चाय-पानी पिलाकर पहले उनका गुस्सा ठण्डा किया। फिर पूछा कि कल जब आप से चर्चा हुई थी तब समाचार का मजमून बताया था। आपने सहमति के साथ हस्ताक्षर भी किए थे। इसमें हमने क्या गलत किया और पाठकों से मदद उदयपुर की बेटी का सपना पूरा करने के लिए मांग रहे हैं। इसमें भिखारी साबित करने जैसी तो कोई बात है नहीं। रही हिन्दुस्तान जिंक की बात तो 50 हजार दे भी देते तो भी बाकी 75 हजार का इंतजाम कहां से करते। उन्हें विश्वास दिलाया कि अब पूरे सवा लाख का इंतजाम भास्कर ही करेगा। जैसे-तैसे उन्हें विदा किया।

हम रोज अपील प्रकाशित कर ही रहे थे। मदद भी आने लगी लेकिन जैसा सोचा था वैसा उत्साह नहीं था। इसी बीच भास्कर ग्रुप द्वारा गोवा में एडिटर्स कॉन्क्लेव आयोजित करने का मेल आ गया। माला के विदेश जाने की तारीख भी नजदीक आ रही थी, यह चिंता भी थी। गोवा कांक्लेव में जाना पड़ा और अगली सुबह प्रकाश शर्मा का फोन आया कि माला सुखवाल परिवार ऑफिस आया था। उसे परसों निकलना है अब तक 50 हजार के करीब ही राशि एकत्र हुई है।

मैंने प्रकाश से कहा, मैं कल तुम्हें 5-6 लोगों के नंबर दूंगा। ये सब कम से कम 25-25 हजार की मदद तो कर ही देंगे। इन छह लोगों को ऑफिस में आमंत्रित करना और इन्हीं के हाथों माला को धनराशि भेंट करवाना और उसके फोटो करवा कर प्रमुखता से समाचार लगाना। ऐसा ही हुआ और शहर में यह मैसेज भी गया कि भास्कर जो कहता है कर के भी दिखाता है। सुखवाल परिवार ने भी भास्कर की पहल को सराहा।

माला के मार्ग की बड़ी बाधा दूर हो चुकी थी। वह फ्लाइट से गई और मैडल जीता तो सबसे पहले फोन भी हमें किया। जिस दिन उसे लौटकर उदयपुर आना था, तब तक भास्कर ने माहौल बना ही दिया था। नतीजा यह हुआ कि खेल संगठनों के साथ ही राजनीतिक दलों के सदस्य भी उसकी अगवानी के लिए पहुंचे और स्वागत रैली शहर के प्रमुख मार्गों से निकली।

किरण माहेश्वरी के प्रयत्न से माला को नौकरी :

खिलाड़ी कोटे में माला को नौकरी मिलना तय थी लेकिन शासकीय विभागों में पद खाली नहीं थे। एक दिन वह ऑफिस आई और बताया कि रेलवे में पद खाली हैं। तब किरण माहेश्वरी उदयपुर से सांसद थीं। उन्हें पूरा मामला समझाया। माला से आवेदन लिखवाया। सांसद माहेश्वरी ने इस आवेदन के साथ अपना सिफारिशी पत्र लगा कर केंद्रीय रेल मंत्री (तब लालूप्रसाद यादव थे) के कार्यालय को भेज दिया।

संयोग ऐसा बना कि कुछ दिनों बाद ही रेलमंत्री (लालू यादव) का उदयपुर दौरा तय हो गया। वो उदयपुर आए और (संभवत: लक्ष्मी विलास) जिस होटल में जन संगठनों से मिल रहे थे, भास्कर ने भी उदयपुर/राजस्थान की रेल जरूरतों को लेकर दो पेज का परिशिष्ट निकाला था। यह परिशिष्ट वहां सांसद माहेश्वरी के माध्यम से लालू यादव को भेंट करवाने के साथ ही किरणजी के माध्यम से माला सुखवाल को भी मिलवाया। लालूजी ने जब माला की उपलब्धियां जानी तो हाथोंहाथ माला को रेलवे में नौकरी की घोषणा के साथ ही विभागीय अधिकारियों को तत्काल आदेश जारी करने को भी कह दिया।

भास्कर को फिर लीड मिली। शहर में चर्चा होना ही थी। माला को रेलवे में नौकरी का आदेश तो मिल गया लेकिन पदस्थापना अजमेर में की गई थी। अकेली लड़की अजमेर में कैसे रहेगी, सुखवाल परिवार की यह समस्या भी सही थी। फिर से किरणजी की मदद ली। भास्कर से भी रेलमंत्री को फेक्स किए और इस सारी पहल का परिणाम यह रहा कि माला को उदयपुर पदस्थ करने के आदेश होगए।

- क्रमश :

कोविड पॉजिटिव होम आइसोलेटेड परिवारों को मिलेगा नि:शुल्क घर जैसा भोजन

उदयपुर (वि.)। अनुष्का ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूट्स हमेशा से ही शिक्षा एवं सामाजिक सरोकारों के कार्यों के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करता रहा है। कोरोना के दूसरे स्ट्रेन के कारण से शहर के सभी अस्पतालों की व्यवस्था चरमरा गई है। होम आइसोलेटेड परिवारों की संख्या भी अपेक्षा से ज्यादा बढ़ गई है। ऐसी विषम परिस्थितियों में अनेको परिवारों को दो समय का शुद्ध, स्वादिष्ट घर जैसा भोजन उपलब्ध हो, इसके लिए अनुष्का ग्रुप, श्री जैन श्वेताम्बर महासभा तथा सौरभ-लीना डूंगरपुरिया द्वारा होम आइसोलेटेड परिवार को दोनों समय का भोजन रोजाना दोपहर 1 बजे तथा शाम 6 बजे तक नि:शुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। होम आइसोलेटेड परिवार नि:शुल्क भोजन के लिए राहुल लोढ़ा-7627062229, राजश्री वर्मा-9928850973, गौरीशंकर मालवीय 9772304244 से संपर्क कर सकते है।

अनुष्का ग्रुप के डॉ. एस एस सुराणा ने बताया कि गत वर्ष संस्थान द्वारा इसी सेवा को 2 माह तक नि:शुल्क चलाया गया था जब उदयपुर में सबसे अधिक कोविड मरीज आ रहे थे। इसके पश्चात कई परिवार शुद्ध सात्विक घर का बना भोजन खाकर जल्द से जल्द स्वस्थ हुए। फिर से जब शहर को आवश्यकता है तो हम श्री जैन श्वेताम्बर महासभा एवं समाजसेवी सौरभ डूंगरपुरिया के साथ मिलकर नि:शुल्क भोजन मुहैया करवा रहे हैं। श्री जैन श्वेताम्बर महासभा उदयपुर से तेजसिंह बोलिया एवं कुलदीप नाहर ने बताया कि जैन समुदाय हमेशा से ही इस प्रकार की सेवा करने में आगे रहा है। सौरभ डूंगरपुरिया ने बताया कि कोविड का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव व्यक्ति की मानसिक स्थिति को असंतुलित करके उसके मन में भय उत्पन्न करता है। यह भय हम प्यार द्वारा दूर कर पाए तो कोविड रोगी के नेगेटिव होने की प्रतिशतता बढ़ जाएगी।

भोजन पैकिंग एवं वितरण में डॉ. अनुष्का ग्रुप की अध्यक्षा कमला सुराणा, सचिव राजीव सुराणा, रंजना सुराणा, मनोहर खजांची, प्रज्ञा खजांची, लीना डूंगरपुरिया, पुलिस मित्र एवं समाजसेवी राजश्री वर्मा, राहुल लोढ़ा, गौरीशंकर मालवीय ने अपनी सेवाएं प्रदान की ।

श्री सीमेंट कर रहा ऑक्सीजन सप्लाई

उदयपुर (वि.)। श्री सीमेंट इन दिनों पूरे भारत में ऑक्सीजन की कमी को पूरा करने के लिए अपने ऑक्सीजन संयंत्रों में 100 प्रतिशत उत्पादन क्षमता को बढ़ाते हुए निरंतर कार्य कर रहा है। श्री सीमेंट राजस्थान, कर्नाटक, बिहार, ओडिशा और छत्तीसगढ़ में उत्पादन इकाइयों से पूरे भारत के अस्पतालों में ऑक्सीजन सिलेंडर की निरंतर सप्लाई कर रहा है। कंपनी की तरफ से देशभर के सभी संयंत्रों के जरिये मुफ्त ऑक्सीजन सिलिंडरों को रिफिल भी किया जा रहा हैं, जिससे ऑक्सीजन की कमी को काफी हद तक दूर किया जा सके।

श्री सीमेंट की मैनेजमेंट टीम ने हमेशा कारोबार से अधिक लोगों की सुरक्षा और स्वास्थ पर महत्व दिया है। इसी जिम्मेदारी के तहत श्री सीमेंट की सभी इकाइयों से ऑक्सीजन की निरंतर आपूर्ति बनाए रखने का संकल्प लिया है। इसी संकल्प के तहत पिछले साल कंपनी ने पाली के सरकारी अस्पताल में कोविड-19 मरीजों के लिए एक समर्पित वार्ड का निर्माण किया था। मौजूदा समय में यह वार्ड मरीजों की बेहतर तरीके से देखभाल कर उन्हें स्वस्थ करने में एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में कार्य कर रहा है।

एचडीएफसी बैंक को 18.1 फीसदी का शुद्ध लाभ

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी बैंक ने 31 मार्च 2021 को समाप्त तिमाही के नतीजों की घोषणा की। इस दौरान बैंक का शुद्ध लाभ 18.1 फीसदी बढक़र 8186.51 करोड़ रुपए रहा। पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में बैंक को 6927.69 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ हुआ था। वहीं चौथी तिमाही में बैंक का एकीकृत शुद्ध लाभ 15.8 फीसदी बढक़र 8434 करोड़ रुपए हो गया। बैंक ने एक साल पहले इसी तिमाही में 7280 करोड़ रुपए का शुद्ध मुनाफा हासिल किया था।

इस तिमाही में शुद्ध ब्याज आय 12.6 फीसदी बढक़र 17,120 करोड़ रुपए हो गई, जबकि 31 मार्च 2020 को समाप्त तिमाही में यह आंकड़ा 15,204 करोड़ रुपए था। तिमाही दर तिमाही आधार पर एचडीएफसी बैंक का एनपीए 1.32 फीसदी बढ़ा, जो वित्त वर्ष 2021 की तीसरी तिमाही में 0.81 फीसदी था। बैंक का शुद्ध एनपीए 0.40 फीसदी 4554.82 करोड़ रुपए रहा। बैंक का कुल अग्रिम 31 मार्च 2020 के 10,43,671 करोड़ रुपए से 13.6 फीसदी बढक़र 31 मार्च 2021 को 11,85,284 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। वित्त वर्ष 2020-21 में बैंक की पूरे साल की एकीकृत आय बढक़र 1,55,885.28 करोड़ रुपए हो गई।

सिक्योर मीटर ने डोनेट किए 5 ऑक्सीजन प्लांट

उदयपुर, (सुजस)। राज्य सरकार के निर्देशानुसार उदयपुर संभाग में कोरोना महामारी से निबटने के लिए तमाम प्रकार के बेहतर प्रबंध किए जा रहे हैं। इसी श्रृंखला में चिकित्सालयों में ऑक्सीजन आपूर्ति की बेहतर व्यवस्थाओं के लिए सिक्योर मीटर संस्थान द्वारा 5 ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट डोनेट किए जा रहे जिन्हें जल्द ही स्थापित किया जाएगा।

संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट ने बताया कि सिक्योर मीटर द्वारा कोविड संक्रमितों को मेडिकल ऑक्सीजन आपूर्ति के लिए प्लांट उदयपुर के एमबी अस्पताल, ईएसआईसी अस्पताल, नाथद्वारा के अनंता हॉस्पिटल, बांसवाड़ा के राजकीय एमजी अस्पताल और भीलवाड़ा के राजकीय एमजी अस्पताल में लगाए जाएंगे। सिक्योर मीटर प्रबंधन ने बताया कि 3 से 4 प्लांट इसी महीने 9 से 11 मई के बीच उदयपुर पहुंचेंगे।

अतिरिक्त संभागीय आयुक्त एलएन मंत्री ने बताया कि एक ऑक्सीजन प्लांट 12 गुणा 15 स्क्वायर फुट एरिया में लगाया जा सकेगा। कुल 716 किग्रा. वजन वाले एक पीएसए टाईप ऑक्सीजन प्लांट से 50 से अधिक बेड तक ऑक्सीजन की आपूर्ति संभव होगी। इसका फ्लो रेट- 10 नॉर्मल क्यूबिक मीटर प्रति घंटा होगा, जबकि ऑक्सीजन प्योरिटी- यूएसपी 93 प्रतिशत होगी। ऑक्सीजन प्लांट का आउटलेट प्रेशर- 4.5 किग्रा. प्रति वर्ग सेमी होगा।

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

Archi Royal City

आपका घर – आपके बजट मे

PREMIUM FLAT

Project at
Airport Main Road
Opp. Transport
Nagar

RERA Approved

RERA Reg. No.: RAJ/P/2018/625

Ongoing Projects

Archi PEACE PARK

New Vidhya Nagar, Hiran Magri, Sec. 4
BSNL Road, Udaipur (Raj.)
Phase 1 Rera Reg. No.: RAJ/P/2019/1027.
Phase 2 Rera Reg. No.: RAJ/P/2019/1028.

ARCHI ARCADE

1 - New Bhupalpura, Behind Laxman
Vatika Nr. Jain Temple, Udaipur-313001
RERA Reg. No.: RAJ/P/2019/964

Upcoming Project

Archi Lovenest

Plot No. 1, Manwa Kheda, Opp. Geetanjali
Hospital, Teh. Girva, Udapur (Raj.) 313001
RERA Reg. No.: RAJ/P/2019/1156

Developer
ARCHI CIVIL CONTRUCTION PVT. LTD.
Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road towards
DPS Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001
Web: archigroup.in | lokesharchigroup@gmail.com

Site Address
Opp. Transport Nagar, Pratapnagar
Airport Road, Udaipur - 313001 (Raj.)
For Booking Contact:
8003597907, 9588016563

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर – 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311–ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294–2429291, मोबाइल – 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।